PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume - 14 | Issue - 12 | December - 2025 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991 | DOI : 10.36106/paripex

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Arts

"उदयपुर के ऐतिहासिक मंदिरों की मूर्ति कला की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण"

KEY WORDS: मूर्तिकला, मंदिर स्थापत्य, संरक्षण, इतिहास

Shivani Jain — Research Scholar, Pacific Academy of Higher Education & Research University, Udaipur, Rajasthan (India)

Dr. Basant Kashyap — Faculty of Social Science and Humanities, Pacific Academy of Higher Education & Research University, Udaipur, Rajasthan

ABSTRACT

इस शोध पत्र के अंतर्गत "उदयपुर के ऐतिहासिक मंदिरों की मूर्ति कला की वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण" की जांच की है। इस जांच के अंतर्गत शोधकर्ता द्वारा शोध में लिए गए मंदिरों का अवलोकन किया गया है। इस शोध पत्र में उदयपुर, राजस्थान के प्राचीन मंदिरों की जानकारी दी गई है, जिससे उनके प्राथमिक निर्माण का पता चलता है। इसी के साथ मंदिर के स्थापत्य एवं वास्तु को भी वर्णित किया गया है। इसके अलावा यह शोध पत्र मंदिरों की वर्तमान स्थिति को भी प्रकट करता है। शोध पत्र के अंत में सारांश भी लिखा गया है, जो की संक्षिप्त में शोध की जानकारी देता है।

प्रस्तावना

इतिहास का संस्कृति एवं सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारत देश में मंदिर सभ्यता एवं संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं एवं इनका इतिहास अत्यंत प्राचीन है। जिनमें कई मंदिर समय के साथ नष्ट हो गए हैं एवं कईयों की स्थिति अत्यंत क्षतिग्रस्त व जर्जर है।

उदयपुर शहर में भी कई ऐतिहासिक मंदिर स्थित है। इस शोध पत्र में उनकी वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण का अध्ययन किया गया है। मंदिरों के संरक्षण एवं मरम्मत में हमारी संस्कृति की ऐतिहासिक धरोहर को अधिक समय तक जीवित रखा जा सकता है, जो समाज को उनके इतिहास से परिचित कराती है। इसी विचार को आधार बनाकर शोध के इस विषय को लिया गया है।

शोध अध्ययन

उदयपुर शहर का इतिहास अत्यंत वैभवशाली रहा है, जिसमें यहां पर पुरातन सभ्यता के अवशेष भी देखे जा सकते हैं एवं यह शहर कई राजाओं एवं शासको की गौरव गाथा को अपने आप में समेटे हुए हैं।

उदयपुर, राजस्थान में बने हुए कई मंदिर भी इतिहास का हिस्सा रहे हैं, जिसमें आयड़ में स्थित जैन मंदिर एवं मीरा मंदिर, श्री जगदीश मंदिर, श्री जगत शिरोमणी मंदिर एवं शहर के बीचो-बीच देहली गेट क्षेत्र पर स्थित नर्बदेश्वर महादेव मंदिर आदि शामिल है। इन सभी मंदिरों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है।

वर्तमान में इन सभी मंदिरों की स्थिति इस प्रकार है कि आयड़ में स्थित जैन मंदिर का सर्वप्रथम निर्माण वि.स. 1026 (672 ईस्वी) में जैन आचार्य यशोभद्र सूरिजी ने रावल निरवाहक सिंह जी के शासन काल के दौरान करवाया था। वर्तमान में इन सभी जैन मंदिरों को जैन समाज द्वारा संरक्षित किया गया है, जिसके अंतर्गत उनका पुनर्निर्माण किया गया है एवं उनके वर्तमान स्थिति नवीन मंदिरों के समान प्रतीत होती है।[1]

पुनर्निर्माण के साथ-साथ कई के स्थान पर मंदिर में बनी हुई कलाकृतियों को मरम्मत करके भी सुधरा गया है एवं मंदिर के प्राचीन इतिहास को बचाए रखने के लिए इसके पुरातन अवशेषों को मंदिर परिसर में ही संरक्षित कर लिया गया है, जिससे सभी दर्शन मंदिर के इतिहास को देख सकते हैं।

आयड़ क्षेत्र में ही जैन मंदिर परिसर के ठीक सामने एक अत्यंत प्राचीन १०वीं शताब्दी का वैष्णव संप्रदाय का मंदिर स्थापित है, जिसे वर्तमान में मीरा मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण रावल अल्लट के शासनकाल के दौरान हुआ था।[2] इस मंदिर की वर्तमान स्थिति अत्यंत क्षतिग्रस्त है, मंदिर का आंतरिक भाग अत्यंत साधारण है जिसमें वहां का पुजारी परिवार रहता है। यही कारण है की आंतरिक भाग सुरक्षित है, परंतु मंदिर का बाहरी भाग पूर्ण रूप से जीर्ण-शीर्ण हो चुका है, जिस पर बनी कलाकृतियां मंदिर के वैभवशाली इतिहास को बताती है, परंतु संरक्षण एवं मरम्मत के अभाव में अधिकांश कलाकृतियां नष्ट अथवा क्षतिग्रस्त हो चुकी है। वर्तमान में इसे पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित किया गया है।

Figure 1 मीरा मंदिर के बाहरी दीवारों पर स्थित मूर्ति कला की वर्तमान स्थिति

उदयपुर शहर के प्राचीन मंदिरों में एक महत्वपूर्ण मंदिर श्री जगदीश मंदिर है, जो पूरे शहर की श्रद्धा का केंद्र होने के साथ ही एक महत्वपूर्ण पर्यटक आकर्षण भी है। इस मंदिर का निर्माण महाराणा जगत सिंह प्रथम द्वारा कराया गया था, जिसको पूर्ण होना में २५ वर्ष का समय लगा था एवं ईस्वि सन १६५२ में यह पूर्ण रूप से निर्मित हुआ। यह मंदिर वर्तमान में सुरक्षित एवं संरक्षित है, जिसका एक कारण इस पर की जाने वाली मरम्मत है। मंदिर की देखभाल अच्छे ढंग से की जाती रही है इसी कारण यह आंतरिक व बाहरी रूप से अच्छी स्थिति में है।

संवत 1736 में मुगल बादशाह औरंगजेब ने हमला कर इस मंदिर के अग्रभाग को बुरी तरह ध्वस्त कर दिया था, परंतु इसका संवत 1780 में महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय द्वारा जीर्णोद्धार कराया गया।[3]

वर्तमान में श्रद्धालु एवं पर्यटक इस तीन मंजिला मंदिर के एक ही अथवा पहली मंजिल तक ही जा सकते हैं। मंदिर की अच्छी देखभाल एवं मरम्मत की जाने के कारण मंदिर की सभी कलाकृतियां सुरक्षित हैं एवं मंदिर निर्माण के इतने वर्षों के बाद भी इस मंदिर की कलाकृतियां एवं उनका आकर्षण मंदिर को शोभायमान करता है।

Figure 2 श्री जगदीश मंदिर

पंचायतन शैली में निर्मित इस मंदिर के चारों ओर चार देवरियां भी बनाई गई है, जो की क्रमशः गणेश, गौरी-शंकर महादेव, सूर्य मंदिर एवं दुर्गा मंदिर हैं।[4] यह सभी देवरियां वर्तमान में सुरक्षित एवं अच्छी स्थिति में है। इस संपूर्ण मंदिर को वर्तमान में राजस्थान देवस्थान विभाग के राजकीय आत्मनिर्भर मंदिर श्रेणी में संरक्षित किया गया है।

जगदीश मंदिर के पास ही एक दूसरा ऐतिहासिक मंदिर बना हुआ है जिसका नाम श्री जगत शिरोमणि मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण महाराणा स्वरूप सिंह ने अपनी कृष्ण भक्त रानी बाघेली जी के लिए ईस्वि सन 1846 में करवाया था।

वर्तमान में इस मंदिर की स्थिति इस प्रकार है कि मंदिर प्रथम स्तर पर पूर्ण रूप से सुरक्षित एवं संरक्षित है, परंतु मंदिर के पार्श्व भाग में बनी छत जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है, परंतु मंदिर पूर्ण रूप से अपने मूल स्वरूप में स्थित है।

इस मंदिर को देखकर प्रतीत होता है कि इसके निर्माण के बाद इसमें कुछ परिवर्तन किए गए हैं। यह मंदिर जगदीश मंदिर के अत्यंत समीप है, परंतु यहां पर आने वाले श्रद्धालु एवं पर्यटकों की संख्या बहुत कम है। यही कारण है कि मंदिर सुरक्षित है एवं इसकी भव्य कलाकृतियां भी इस मंदिर को शोभायमान करती है। यह मंदिर भी वर्तमान में राजस्थान देवस्थान विभाग के राजकीय आत्मनिर्भर मंदिर श्रेणी में संरक्षित किया गया है।

उदयपुर शहर में ही भगवान शिव को समर्पित एक प्राचीन मंदिर स्थित है, जो कि शहर की बीचो-बीच देहली गेट स्थान पर बना हुआ है। इस मंदिर का निर्माण १८वीं शताब्दी का माना जाता है।[5] मंदिर की वर्तमान स्थिति अच्छी है एवं इसका रखरखाव सही तरीके से किए जाने के कारण मंदिर अपने वास्तविक स्वरूप में है।

मंदिर के आंतरिक एवं बाह्य ओर सुंदर कलाकृतियों की नक्काशी की गई है। मंदिर के अंदर की ओर अप्सराएं, कृष्ण लीला एवं विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाई गई है। साथ ही बाहरी दीवारों पर भी अप्सराओं एवं कई प्रकार की देवी-देवताओं की छवियों का अंकन किया गया है। यह सभी आकृतियों आज भी अपने मूल स्वरूप में है।

इस मंदिर के अच्छी स्थिति में होने के कई कारण है, जिनमें से एक यह है की अन्य मंदिरों की तुलना में यह नया है एवं यहां आने वाले दर्शकों की संख्या भी काम है।

जगदीश मंदिर के समान यह एक पर्यटक स्थल नहीं है, इसी कारण मंदिर का सामान्य रख-रखाव सही होता रहा है एवं यह मंदिर अच्छी स्थिति में है। मंदिर को वर्तमान में राजस्थान सरकार देवस्थान विभाग के राजकीय प्रत्यक्ष प्रभार मंदिर की श्रेणी में संरक्षित किया गया है।

Figure 3श्री नर्बदेश्वर महादेव मंदिर

निष्कर्ष- उदयपुर, राजस्थान के ऐतिहासिक मंदिरों की वर्तमान स्थिति मुख्य रूप से अच्छी है, जिसका कारण मंदिरों में किया गया रख-रखाव एवं जीर्णोद्धार है। आयड़ के जैन मंदिरों को पुनः निर्मित किया गया एवं जगदीश मंदिर का भी जीर्णोद्धार कराया गया था। साथ ही समय-समय पर इनकी मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य भी किया जाता है।

कुछ मंदिर जैसे कि जगत शिरोमणि मंदिर एवं नर्बदेश्वर महादेव मंदिर भी अच्छी स्थिति में है, क्योंकि यहां पर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या कम है एवं अंदर की ओर बने होने के कारण यह बाहरी आतताइयों से भी सुरक्षित रहे हैं और आयड़ का मीरा मंदिर अत्यंत प्राचीन होने के कारण एवं रख-रखाव के अभाव में जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है।

संदर्भ ग्रंथ

1. उदयपुर का वेभवः झीलें एवं संस्कृति, GMSL धाकड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन , उदयपुर (Dr. L. L. धाकड़)
2. उदयपुर का वेभवः झीलें एवं संस्कृति, GMSL धाकड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन , उदयपुर (Dr. L. L. धाकड़) पृष्ठ संख्या 397
3. उदयपुर राज्य का इतिहास द्वितीय खंड, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर (रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा) पृष्ठ संख्या 621
4. Architectural glories of Mewar, Raj book enterprises, Jaipur (Dr. Raj Shekhar Vyas) Page 76
5. राजस्थान पत्रिका, दिनांक 18.7.2025 पृष्ठ संख्या 4